

सामाजिक संस्था सम्पूर्णा
समग्र विकास की ओर अग्रसर
गैर सरकारी संगठन

आलेख

‘मां का जन्मदिन’

—डॉ. शोभा विजेन्द्र
संस्थापिका, सम्पूर्णा

अभी कुछ दिन पहले ही तो हमारे देश के गौरव प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की माता जी का 100वां जन्मदिन था। इतिहास, यह जन्मदिन और उस जन्मदिन पर एक बेटे द्वारा अपनी मां की जन्मतिथि मनाना, कभी नहीं भूल सकता। कितना विहंगम, सुंदर, अद्भुत एवं प्रातःस्मरणीय यह दृश्य है — देश के प्रधानमंत्री, माटी के लाल, पुत्र नरेन्द्र जमीन पर बैठकर श्रद्धा भाव से अपनी मां के चरणों को पखार रहे हैं। और मां की 100वीं जन्मतिथि पर उनसे आशीर्वाद ले रहे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे पूरी कायनात आज इस मां और पुत्र के अनूठे श्रद्धा उत्सव पर लालयित हो रही ह। चरण पखारने का यह दृश्य न केवल इस लोक में अपितु सर्व संसार में अनुपम दृश्य उखेर रहा है। उस 100 वर्षीय गर्वित मां की आंखों में एक तेजपुंज चमक रहा था। यह मां जिनका नाम हीराबा मोदी है, शांत भाव से प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठी हुई जगदम्बा स्वरूपी प्रतीत हा रही थीं। अद्भुत दृश्य है। जिस प्रकार के मनोभाव हमें रामायण में श्री राम द्वारा अपनी माताओं, मां कौशल्या, सुमित्रा और कैकयी के लिए उत्पन्न होते हैं, वैस ही प्रत्यक्ष दर्शन इस दृश्य में भी हुए।

हीराबा मोदी का पुत्र, जो स्वयं विश्व के सर्वोच्च राष्ट्र, भारत का प्रधानमंत्री है, जल से अपनी मां के पाद-प्रक्षालन यानि कि चरणों को धोकर उसकी धूलि को मस्तक पर लगा रहा है। इससे सुंदर दृश्य मैंने जीवन में कभी नहीं देखा। प्रधानमंत्री जी ने अपने ब्लॉग में लिखा है कि उनके व्यक्तित्व को आकार देने में उनकी मां की अहम भूमिका

है। यह तो सर्वविदित है कि मां ही बच्चे की प्रथम गुरु होती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण भी यही है कि बच्चे कहीं न कहीं मां का ही स्वरूप होते हैं। किंतु हमारे प्रधानमंत्री जिस प्रकार से वर्ष दर वर्ष इस सत्य को प्रस्तुत कर रहे हैं वह भारतीय संस्कृति का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस पर व्यापक रूप से चर्चा, चिंतन और अनुकरण होना चाहिए। हर पुत्र और पुत्री को इसका अनुसरण करना केवल यह लोक बल्कि परलोक भी सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए। कभी-कभी इस 21वीं शताब्दी में मुल्यों के पतन के कारण अनुसरण करने योग्य अनुभूतियों की कमी अनुभव होती है। लेकिन प्रधानमंत्री जी के मातृ प्रेम को देखने और अनुभव करने के पश्चात यह अवश्य लगता है कि धैर्य, करुणा, निडरता और गजब के अदम्य साहस से ओत-प्रोत नरेन्द्र भाई मोदी अनुकरणीय हैं। यह हर सफल व्यक्ति के लिए न केवल देखने भर की बात है बल्कि अनुकरण के लिए, एक पुख्ता जीता जागता उदाहरण है। मां और पिता की मृत्यु के पश्चात उनके कसीदे पढ़ना तो सर्वसाधारण करता ही है। किंतु उनके जीते जी उनके प्रति ऐसे सर्मपण और सम्मान भाव रखना ही नरेन्द्र मोदी जी को एक सच्चे पुत्र की श्रेणी में ला खड़ा करता है। उन्होंने कहा कि मेरी मां सरल भी है और असाधारण भी। मैंने बार-बार इन शब्दों को पढ़ा और भावार्थ जानने की चेष्टा की। साधारण वेशभूषा में ममतामयी उनकी मां सच में सरल हैं। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपने बच्चों के साथ, खड़ा होना उनकी असाधारणता को प्रदर्शित करता है और सफलता के सोपानों पर चढ़ते हुए उनके पुत्र नरेन्द्र की सौम्यता, सरलता और करुणा इस बात द्योतक है कि यह मां सच में ही वंदनीय है। न जाने क्यों आज ऐसा लग रहा है कि मां को वंदनीय बनाने का कार्य तो केवल और केवल उसकी संतान ही कर सकती है। यदि आप स्वयं से अच्छे नहीं हैं और सद्गुणों से ओत-प्रोत नहीं हैं तो समाज आपकी मां को ही अच्छा नहीं कह सकता। उसी प्रकार से यदि देश के नागरिक अपने कर्तव्यों की परिपाटी पर खरे नहीं उतरते तो उस राष्ट्र को भी अच्छा नहीं कहा जा सकता। आज हीराबा के स्वरूप में ही, मां जगदम्बा का एहसास होता है।

प्रधानमंत्री जी अपनी मां के संघर्षों की कहानी अपनी जुबानी कह रहे हैं। वह हीराबा जिसे स्वयं मां का प्यार नहीं मिला, उसने न केवल

अपनी संतानों को बल्कि दूसरे बच्चों पर भी ममता के खजाने लुटाए। अब्बास नाम के बालक को अपने घर में न केवल सुरक्षा दी बल्कि अन्नपूर्णा बनकर उसकी समस्त जरूरतों को पूरा किया। सामाजिक समरसता और समभाव को कहीं सीखने जाने की आवयकता नहीं होती। यह तो मानव मात्र का स्वभाविक गुण है। हीराबा ने एक मुस्लिम परिवार के बच्चे को इन्हीं भावों के साथ पाला और बड़ा किया। ईद के आने पर तरह-तरह के पकवान बनाकर अब्बास की मां बनकर उसको त्योहार की खुशियों से नवाजा। किन भावों से हीराबा मोदी का अभिनंदन करूँ और कैसे उनके पुत्र को संबोधित करूँ? आज तो सब शब्द कम पड़ गए हैं। सारे रस कम नजर आ रहे हैं। यह उत्सव का दिन है। वंदन का दिन है और अनुकरण करने का दिन है और किसी विपक्ष के लिए भी सर झुकाकर हीराबा के आशीर्वाद का दिन है। यह जन्मतिथि हमारे बच्चों के दिल में सदा-सदा के लिए अंकित हो जाए और वे भी नरेन्द्र भाई की तरह अपनी मां का सम्मान करें इसके लिए यह आवश्यक है कि इस विषय को हर घर का हिस्सा बनाया जाए।

मैं, निवेदन करूंगी कि स्कूलों का पाठ्यक्रम बनाने वाले साहित्यकारों, इतिहासकारों और गुणीजनों से कि वह इस दृश्य और इस कथा को छठी कक्षा के पाठ्यक्रम में अवश्य सम्मिलित करें। अनेकों बार जब भी भारत का अन्य राष्ट्रों से मुकाबला होता है तब-तब भारत अपनी मान-मर्यादाओं, परंपराओं और संवेदनाओं के कारण सबसे जीत जाता है। प्रधानमंत्री ने दश में आठ वर्षों में क्या दिया और क्या नहीं? मैं इस विषय पर नहीं जाती। लेकिन प्रधानमंत्री ने अपनी जननी मां और राष्ट्र माता दोनों के स्वरूप को दिव्यमान, अभुतपूर्व और सम्मानित करने हेतु कोई कसर नहीं छोड़ी। आइए! हम इसी गौरवशाली संस्कृति को आगे बढ़ाएं और प्रधानमंत्री जी की मां की 100वीं जन्मतिथि पर पद-प्रक्षालन की फोटो और लेख एक-एक भारतीय के घर-घर पहुंचाएं। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सब अपने-अपने स्थानों पर रहते हुए इस उदाहरण को हमारे बालकों के लिए सीखने और अनुकरण करने के लिए विशेष बिन्दु बनाएंगे। भारत की विरासत टेक्नॉलोजी में आगे जाकर भक्षक बनने की कभी नहीं रही। सब पर राज कर सबको गुलाम बनाने की परंपरा भी हमारी नहीं है। हमारी

संस्कृति तो भावनाओं की चरम सीमा है। केवल यही देश है जिसमें कृष्ण-सुदामा, राधा-कृष्ण, राम-भिलनी, हीराबा-नरेन्द्र, हीराबा-अब्बास, शिवाजी-जीजाबाई के जैसे उदाहरण घर-घर में विद्यमान हैं। राखी के पवित्र धागे या पाणिग्रहण की पवित्र अग्नि, सोलह संस्कार, जन्म-मृत्यु भोज ये सब हिन्दुस्तान की बपौती है। अब समय आ गया है कि जब हम अपने बच्चों को विज्ञान के साथ इन सभी किस्सों और परंपराओं का पाठ पढ़ाएं।
